'अकाल मृत्यु ' कहानी के बहाने बच्चों का असामयिक प्रौढ़त्व

डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृति वरिष्ठ महाविद्यालय, नलेगांव
ता. चाकुर जि. लातूर (महाराष्ट्र)।

लेखक समाज में जो कुछ देखता है, सुनता है तथा अनुभव करता है, उस अनुभूति को बौद्धिकता, भावुकता, कल्पकता और अपनी अभिव्यक्ति शैली के आधारपर रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इसीलिए साहित्य में समाज की विविध भाव-भंगिमाओं का, दृश्यों का एवं घटनाओं का चित्रण होता है, जो हमारे आसपास का यथार्थ लगता है। इस दृष्टि से आधुनिक साहित्यकारों में समाज की विभिन्न समस्याओं का चित्रण करनेवाले रचनाकारों में से स्वयं प्रकाश जी एक चर्चित रचनाकार हैं। आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में से मध्यवर्गीय जीवन के कुशल चितेरे स्वयं प्रकाश का जन्म 20 जनवरी 1947 मैं मध्य प्रदेश के इंदौर में हुआ। आपने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूर्ण कर एक औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी करना आरंभ किया। स्वयं प्रकाश जी का बचपन और नौकरी का अधिकांश हिस्सा राजस्थान में ही बीता है।

आठवें दशक के कहानीकारों में से स्वयं प्रकाश हिंदी साहित्य के एक चर्चित रचनाकार रहे हैं। उनकी कहानियों में एक ओर वर्ग शोषण के विरुद्ध चेतना है, तो दूसरी ओर सामाजिक जीवन में व्याप्त जाति, संप्रदाय और लिंग के आधार पर हो रहे भेदभाव के विरुद्ध आक्रोश भी है। उनकी अधिकतर कहानियाँ किस्सागोई शैली में लिखी गई हैं। सरलता, सादगी, एकता और पारदर्शिता, रोचकता, जीवन संघर्ष, मनुष्य में आस्था आदि आपके द्वारा लिखी गई कहानियों की महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। मात्रा और भार, सूरज कब निकलेगा, आसमां कैसे-कैसे, अगली किताब, आएंगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी, आधार चयन आदि आपके चर्चित कहानी संग्रह हैं।

कहानियों के साथ-साथ स्वयं प्रकाश जी ने उपन्यास, नाटक, निबंध, व्यंग्य आदि हिंदी साहित्य की विधाओं पर लेखनी चलाई। एक दृष्टि से विविध विधाओं पर लेखन कार्य कर आपने हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके साहित्यिक योगदान को ध्यान में रखते हुए उन्हें राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार, सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार, वनमाली पुरस्कार, साहित्य मनीषी सम्मान, पहल सम्मान, आनंद सागर कथाक्रम सम्मान आदि विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। स्वयं प्रकाश जी की 'अकाल मृत्यु' एक चर्चित कहानी है। आर्थिक तंगहाली या गरीब से त्रस्त परिवार □□ किसी भी प्रमुख व्यक्ति (माता-पिता या अन्य प्रमुख सदस्य) की मृत्यु होने से जब परिवार की जिम्मेदारी बालकों पर आ जाती है, तब उसमें असमय प्रौढ़त्व आने लगता है। इस कहानी में भी पिता की अकाल मृत्यु के कारण छोटे से बालक पर किस प्रकार असमय प्रौढ़त्व आ जाता है और उसका परिणाम उसके आचार-विचारों पर कैसे होता है इसे बताया गया है। इस कहानी को समझने के लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार एवं विमर्श करना होगा। जैसे -

1) कथावस्तु की संक्षिप्तता :-

'अकाल मृत्यु' एक संक्षिप्त लघु कहानी है। इस लघु कहानी में कहानीकार ने गागर में सागर भरने की

उक्ति को चरितार्थ किया है। कहानी में नौवी कक्षा में पढ़ रहे अमृतलाल नामक लड़के की मानसिकता का चित्रण किया गया है। उसके दोस्त अमृतलाल को प्यार से इम्मी कहते थे। इम्मी फुटबॉल का अच्छा खिलाड़ी था। वह पढ़ाई करना चाहता था, लेकिन उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। ऐसे हालात में उसके पिता की अकाल मृत्यु ने उसे अपनी पढ़ाई छोड़ने के लिए विवश किया। इस परिस्थिति ने उसकी कोमल इच्छाओं को तहस-नहस कर उसमें अकाली प्रौढ़त्व ला दिया। आर्थिक समस्याओं तथा अधूरी शिक्षा के बावजूद भी इम्मी की खिलाड़ी वृत्ति नष्ट नहीं होती यही इस कहानी की कथावस्तु है। कथावस्तु आकार की दृष्टि से छोटी होते हुए भी वह पाठक को पूर्ण लगती है। एक पूर्ण भावचित्र को हमारे सामने प्रस्तुत करने में कहानीकार को यहाँ सफलता मिली है।

2) मूल संवेदना :-

मूल संवेदना से तात्पर्य है उस कहानी का आशय। बिना आशय की कोई भी कहानी नहीं होती। कहानीकार का अपनी कहानी लिखने के पीछे कोई न कोई उद्देश्य होता है, वही उद्देश्य कहानी का आशय कहलाता है। 'अकल मृत्यु' कहानी उस बच्चे की मानसिक पीड़ा को व्यक्त करती है, जिसे पिता की अकाल मृत्यु के कारण अपनी शिक्षा अधूरी छोड़नी पड़ती है। साथ ही साथ उसका कोमल बाल्यकाल परिस्थितियों के कारण छीना जाता है और उसमें अकाली प्रौढ़त्व आ जाता है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में बालक में आए वैचारिक तथा मानसिक बदलाव को यह कहानी व्यक्त करती है। यही इस कहानी की मूल संवेदना है।

3) मित्रता का भाव :-

मनुष्य के जीवन में सभी रिश्तो में से मित्रता के रिश्ते को सर्वोपरि माना जाता है। मित्रता में अपनेपन की भावना होती है। जाति, धर्म, संप्रदाय के परे जाकर एक दूसरे के सुख-दुख में सम्मिलित होने की भावना को मित्रता ही बढ़ाती है। कहानी में अमृतलाल उर्फ इम्मी नौवी कक्षा का छोटा बच्चा है। उसके क्लास के बालकिशन, राधेश्याम,अशोक जैसे मित्र हैं। इम्मी के पिता की मृत्यु की खबर सुनते ही उसके सभी दोस्तों को दुख होता है। दाहसंस्कार के बाद तीसरे दिन कक्षा के बड़े मित्रों में से बालकिशन और राधेश्याम ने आपस में बात कर और सब को बुलाकर इम्मी के घर 'बैठने' जाने का तय किया। मित्रों में से अमीर वकील कुटुंबले के बेटे अशोक ने सफेद कपड़े पहनकर जाने की बात की, तो मामला थोड़ा उलझ गया। क्योंकि," सबके पास तो सफेद पेंट- शर्ट था भी नहीं, एक दो के पास था भी तो धुला हुआ नहीं था या फटा हुआ था। दूसरी बात यह थी कि सफेद कपड़े पहनने के लिए स्कूल की छुट्टी के बाद पहले घर जाना पड़ता, और फिर घरवाले पता नहीं आने देते या नहीं"1 ऐसे समय सभी को लगता है कि स्कूल की छुट्टी के बाद सीधे इम्मी के घर जाना अच्छा रहेगा और सभी उसे मिलने के लिए उसके घर जाते हैं, उसका हालचाल पूछते हैं, उसके प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हैं। छोटे बच्चों में आई हुई यह अपनेपन की भावना की मुख्य आधारशीला उनकी मित्रता ही है।

4) शिक्षा छोड़ने की विवशता :-

अपने जीवनकाल में कई बच्चों को कम आयु में ही अपनी शिक्षा छोड़नी पड़ती है। उनमें से कुछ बच्चों को आर्थिक परिस्थिति के कारण, कुछ बच्चे पढ़ना नहीं चाहते, तो कुछ बच्चे अपने परिवार की सायता करना चाहते हैं। ऐसे कई कारण है जिससे बच्चों की शिक्षा अधूरी ही रह जाती है। लेकिन यहाँ स्वयं प्रकाश जी ने अपनी कहानी में नौवी कक्षा में पढ़ रहे इम्मी नामक बच्चे की शिक्षा अधूरी रहने का कारण उनके पिता की अकाल मृत्यु को बताया है। पिता घर का पालन पोषण करनेवाला मुख्य आधार रहता है। उन्हीं के आधार पर बच्चे अपनी पढ़ाई करते हैं, खेलकूद करते हैं। लेकिन अगर घर के पोषणकर्ता पिता की मृत्यु हो जाए, तो घर पर एक दुख का पहाड़ सा टूट जाता है। यही इम्मी के साथ हुआ। परिणामस्वरूप इम्मी को मजबूरन अपनी शिक्षा छोड़नी पड़ी। परिवार की जिम्मेदारी छोटे

इम्मी पर आने के कारण उसे अपने पिता का सब्जी बेचने का व्यवसाय संभालना पड़ता है।

5) खिलाड़ी वृत्ति :-

इस कहानी में चित्रित नौवी कक्षा का बालक इम्मी फुटबॉल का बहुत अच्छा खिलाड़ी था। इस खेल में उसे अच्छी रुचि थी। " वह न सिर्फ स्कूल की फुटबॉल टीम में था बल्कि संभाग की टीम में भी खेल चुका था।"2 उसे कहा गया था कि जब उसका राज्य स्तरीय टीम में चयन हो जाएगा तब उसकी फीस माफ करवा दी जाएगी। फीस माफ होने की आशा से वह फुटबॉल खेल की बहुत प्रैक्टिस करता था। अंधेरा होने तक स्कूल के मैदान पर फुटबॉल खेलता रहता था, चाहे अकेला ही क्यों न हो वह मैदान में दौड़ते या चक्कर लगाते रहता था। पिता की मृत्यु के पश्चात उसकी पढ़ाई और खेल भी छूट जाता है, लेकिन उसकी खिलाड़ी वृत्ति कम नहीं होती। चार पाँच साल के बाद एक शाम का प्रसंग बताते हुए लेखक कहते हैं कि कुछ बच्चे मैदान में बारिश में भीगते हुए खेल रहे थे " अचानक एक लंबा चौड़ा आदमी पता नहीं कहाँ से आया और बच्चों के साथ खेलने लगा। वह बच्चों को छका रहा था और उससे लटकने-चिपकने के बावजूद बच्चे उससे गेंद नहीं छीन पा रहे थे। घंटे भर बाद वह आदमी अपने कपड़े निचोड़ता चुपचाप उधर चला गया जहाँ सड़क किनारे एक सब्जी का ठेला तेज बरसात में लावारिस - सा खड़ा था"3 यह कोई और न होकर वही इम्मी था, जो अब काफी बड़ा हो हो चुका था। बड़ा होने के बावजूद भी उसकी खेल-कूद की वृत्ति कम नहीं हुई थी। यह खिलाड़ी वृत्ति उसके इसी आचरण से दिखाई देती है।

6) आर्थिक दुर्बलता :-

मनुष्य के जीवन के केंद्र में सबसे महत्वपूर्ण है अर्थ एवं धन। मनुष्य अपने जीवन में जो भी कुछ करता है वह अर्थ प्राप्ति या धन प्राप्ति से प्रेरित होकर। अर्थ या धन के अभाव में मनुष्य के सभी कार्य ठप हो जाते हैं। 'अकाल मृत्यु' इस कहानी का पात्र बालक इम्मी भी आर्थिक दुर्बलता का शिकार है। नौवी कक्षा में पढ़नेवाले इस बालक के बारे में कहानीकार बताते हैं कि," उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। कई बार वह समय पर फीस जमा नहीं करवा पाता था और उसे अक्सर अपनी फीस माफ करवाने के लिए इस-उसके पीछे घूमते देखा जा सकता था।"4 पढ़ने की उसकी बहुत इच्छा थी। ऐसे में पिता की अकाल मृत्यु से उसकी इस इच्छा पर पानी फिर गया। आर्थिक दुर्बलता के कारण ही वह पिता की मृत्यु के बाद अपने पिता द्वारा लगाया सब्जी का ठेला चलाने की बात करता है, ताकि वह अपनी माँ तथा अपना पेट भर सकें। उसके इस विचार तथा कार्य से उसकी आर्थिक दुर्बलता हमारे सामने आती है। आर्थिक दुर्बलता के कारण ही उसकी आशा-आकांक्षाएँ चूर-चूर हो जाती है।

7) बचपन का छीन जाना :-

मनुष्य के जीवन की अलग-अलग अवस्थाओं में से बचपन एक ऐसी अवस्था है, जिसमें वह निस्वार्थ भाव से अपने मित्रों के साथ खेल- कूद सकता है, परिवार का लाड-प्यार प्राप्त कर सकता है। यह एक कोमल और सुखद भावनाओं से भरी आयु होती है, जिसे सभी चाहते हैं। कई बार जीवन में ऐसी घटनाएँ घटित होती है, जिससे बचपन छीना जाता है। आर्थिक दुर्बलता, पारिवारिक समस्या तथा प्राकृतिक विपदाओं के कारण बालकों का बचपन कई बार कुमला जाता है। इस कहानी में भी नौवी कक्षा में पढ़नेवाला इम्मी, जो एक बालक है। उसकी आयु मित्रों के साथ खेलने कूदने की है, पढ़ने की है, बिना तनाव के खुशियों से रहने की है। ऐसे हालात में अचानक उनके पिता का देहावसान होने से उसपर परिवार की जिम्मेदारी आ जाती है। परिणाम स्वरूप अकाली प्रौढ़त्व को उसे स्वीकार ना पड़ता है, जिससे उसका बचपन छीन जाता है।

8) असामयिक प्रौढ़त्व :-

कहानी का पात्र इम्मी नौवी कक्षा का लड़का है, लेकिन उसके पिताजी की अकाल मृत्यु के कारण उसमें समय से पहले ही प्रौढ़त्व आ जाता है। जब उसके दोस्त इम्मी के घर मिलने के लिए जाते हैं और राधेश्याम के

इम्मी से पूछने पर कि ईम्मी तू स्कूल नहीं आएगा तो फिर क्या करेगा ? तब इम्मी का यह कहना कि ," सब्जी का ठेला लगाऊँगा। जहाँ बाऊजी लगाते थे - भंडारी मिल के सामने - वही लगाऊँगा। काका गाँव से सब्जी लाते हैं। उनके दोनों बेटे हुकमचंद मिल के आगे लगाते हैं। मैं इधर लगाऊँगा। दिन के पचास रुपए भी कमाऊँगा तो बहुत है यार ! मैं हूँ और माँ है। और है कौन ? एक बहन थी, उसकी शादी कर दी। वैसे आदमी पढ़-लिखकर भी क्या करता है ? काम-धंधा ही तो करता है।"5 इम्मी की यह सोच उसमें असमय आए हुए प्रौढ़त्व को व्यक्त करती है।

9) दार्शनिकता :-

नौवी कक्षा में पढ़नेवाला बालक इम्मी का दार्शनिक बातें करना आसान नहीं है। जीवन की दार्शनिकता को लेकर सोचने की भी उसकी आयु नहीं है, लेकिन पिता की अकाल मृत्यु के कारण उसमें असमय प्रौढ़त्व आ जाता है और वह एक अनुभवी आदमी के समान बातें करने लगता है। कहानी में राधेश्याम नामक मित्र जब इम्मी को गले लगाकर कहता है कि तेरे पिताजी की डेथ का बहुत अफसोस हुआ है इम्मी, तब इम्मी का उसे यह कहना कि," सब लिखाकर लाते हैं भैया। जब खत्म हो जाती है तो हो जाती है। फिर रोओ चाहे छाती कूटो, चाहे जो भी करो।"6 उसका यह बोलना अपनी उम्र से बहुत बड़े आदमी की तरह लगता है। उसके इन विचारों में मृत्यु की अटलता अर्थात जन्म मृत्यु का दर्शन दिखाई देता है।

10) शीर्षक की सार्थकता:-

कहानी का शीर्षक अपने आप में सार्थक और स्पष्ट है। कहानीकार ने इस लघु कहानी में कहानी के दूसरे परिच्छेद में ही 'एक दिन सुबह सुबह पता चला कि उनके पिताजी की मृत्यु हो गई है।' इस वाक्य से कहानी के शीर्षक की ओर संकेत किया है। कहानी को पढ़ते समय पाठक को शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट रूप से समझ में आ जाती है। पिता की अकाल मृत्यु के कारण कहानी का पात्र अमृतलाल उर्फ इम्मी को किस प्रकार शिक्षा और अपनी फुटबॉल खेलने की इच्छा को त्यागना पड़ता है और अपने परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है इसे व्यक्त किया गया है। साथ ही साथ बालक में किस प्रकार असमय प्रौढ़त्व आ जाता है, इसे भी कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कुल मिलाकर कहानी का शीर्षक स्पष्ट और समर्पक लगता है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार स्वयं प्रकाश द्वारा लिखित 'अकाल मृत्यु' कहानी उस बच्चे की मानसिक पीड़ा को व्यक्त करती है, जिसे पिता की अकाल मृत्यु के कारण अपनी शिक्षा अधूरी छोड़नी पड़ी इस कहानी से हमारे सामने कुछ निष्कर्ष बिंदु आ जाते हैं। जैसे -

- परिवार में पिता के भरण पोषण के तले ही बच्चे अपनी पढ़ाई लिखाई कर सकते हैं और उन्हें अपने परिवार की छाया मिलती रहती है।
- परिवार के पालनकर्ता की अकाल मृत्यु से उस परिवार के बच्चों के कंधे पर परिवार के वहन की जिम्मेदारी आ जाती है, जिससे उसका बाल्य जीवन छीन जाता है।
- बालकों में पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण असमय प्रौढ़त्व आ जाता है और वे अल्प आयु में भी प्रौढ़ों जैसी दार्शनिक बातें करने लगते हैं।
- पिता की अकाल मृत्यु के कारण बच्चों की पढ़ाई के, खेलकूद के सभी सपने चूर-चूर हो जाते हैं। जैसे कहानी का पात्र अमृतलाल उर्फ ईम्मी।
- कहानी के माध्यम से लेखक ने पिता की अकाल मृत्यु से छोटे बालक की वेदना भरी मानसिकता तथा उसमें आयी निर्णय लेने की क्षमता का भी परिचय दिया है।

कुल मिलाकर स्वयं प्रकाश की यह एक लघु कहानी होकर भी यह पाठकों को बालक के प्रति सोचने के लिए विवश करती है। सरल सीधी भाषा में छोटी सी घटना के माध्यम से कहानीकार ने पिता की अकाल मृत्यु से

बालकपर आई जिम्मेदारी और उस जिम्मेदारी से आशाओं का समाधान करने की प्रेरणा को प्रस्तुत किया है।

संदर्भ सूची :-

1) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.110
2) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.110
3) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.112
4) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.110
5) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.112
6) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.112

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com